भाकृअनुप
ICAR

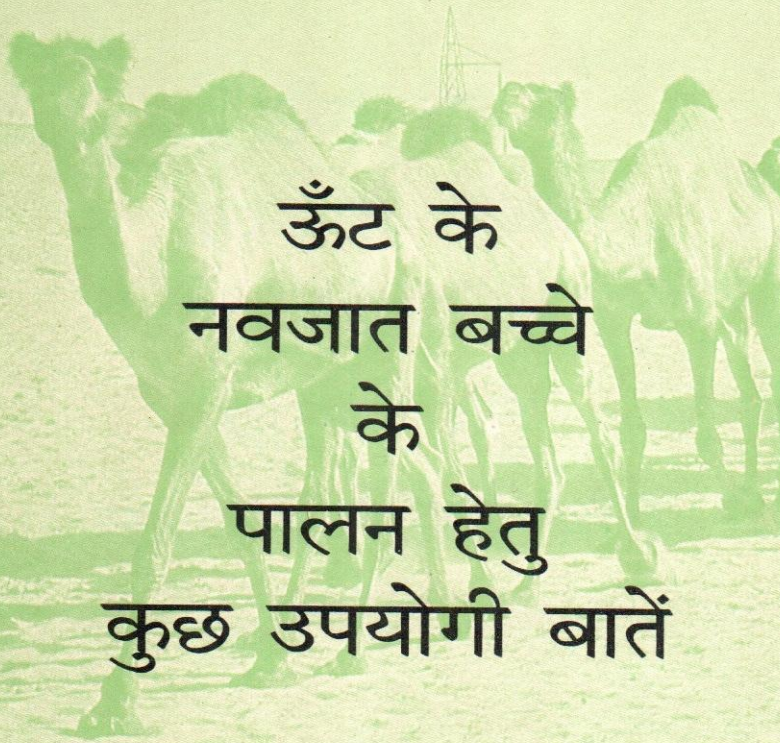

ऊँट के नवजात बच्चे के पालन हेतु कुछ उपयोगी बातें

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़ शिवबाड़ी
बीकानेर

भाकृअनुप
ICAR

ऊँट के नवजात बच्चे के पालन हेतु कुछ उपयोगी बातें

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़ शिवबाड़ी
बीकानेर

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक

परियोजना निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी,
बीकानेर 334001

मुद्रक

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रिंटर्स
बिस्सों का चौक
बीकानेर 334001

ऊँट के नवजात बच्चे के पालन हेतु कुछ उपयोगी बातें

ऊँट मरुस्थलवासियों के लिए एक बहुउपयोगी पशु है। मरुस्थल के ग्रामीण क्षेत्र में ऊँट को मुख्यतः हल जोतने, भार ढोने, पानी निकालने एवं लाने, अनाज पीसने, एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने के लिए व दूध के लिए काम में लिया जाता है।

ऊँट में प्रजनन दर कम है इसका मुख्य कारण लम्बा गर्भकाल है। फलस्वरूप एक साँडनी से दो साल में एक बच्चे की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त ऊँट के बच्चों में मृत्यु दर भी अधिक है। इन समस्त बातों को देखते हुए यह अति आवश्यक हो जाता है कि ऊँट के बच्चे का पालन-पोषण बहुत ही ध्यानपूर्वक किया जाये। ऊँट के नवजात शिशु के पालन-पोषण में निम्न बतायी गयी उपयोगी बातों पर ध्यान देकर नवजात बच्चों में मृत्यु दर को कम किया जा सकता है :

1. छः-सात मास एवं उसके बाद की गर्भिणी मादा ऊँट को चरने हेतु चरागाह में नहीं भेजना चाहिए। घर पर ही उनकी देखभाल करना उचित है।

2. गर्भावस्था में मादा ऊँट को नर ऊँटों के साथ नहीं रखना चाहिए।

3. गर्भावस्था के दौरान मादा ऊँट को उपयुक्त आहार चाहिए। यदि हरा चारा उपलब्ध हो तो अवश्य देना चाहिए इसमें विटामिन-ए होने की वजह से माँ व बच्चे को रतौंधी रोग नहीं होता।

4. यदि हरा चारा उपलब्ध न हो तो विटामिन-ए की 30 लाख आई० यू० इन्जेक्शन द्वारा लगवाना चाहिए।

5. प्रसव के अनुमानित समय के एक सप्ताह पूर्व से ही मादा ऊँट का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि ब्यात के समय किसी तरह की कठिनाई हो तो पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। बच्चे को बाहर निकालने में मदद करनेवाले व्यक्ति को अपने हाथों को डिटॉल या सेवेलॉन अथवा

लाल दवा या साबुन से हाथों को अच्छी तरह धोना चाहिए। नाखून भी बड़े नहीं होने चाहिए। बढ़े हुए नाखूनों से मादा ऊँट के जननांग में चोट आने की सम्भावना रहती है।

6. बच्चे के जन्म लेते ही उसके नाक को सर्वप्रथम साफ मुलायम कपड़े से साफ करना चाहिए। तत्पश्चात सारे शरीर को पोंछना चाहिए।

7. नवजात बच्चे के नाड़े (नाल) को डिटॉल से साफ की गयी कैंची अथवा ब्लैड से काटकर साफ मोटे धागे से कसकर बाँध देना चाहिए। एवं उसके बाद नाड़े पर टिन्चर आयोडीन या डिटॉल लगाना चाहिए।

8. नाड़े को नाभि से करीब 4" या 5" की दूरी से काटना चाहिए।

9. बच्चे के जन्म के पश्चात् ए० टी० एस० व टी० टी० का इन्जेक्शन लगवाना चाहिए।

10. नवजात बच्चा एक घण्टे में स्वयं अपनी माँ का दूध पीने लगता है। यदि माँ दूध न पिलाये तो मदद कर बच्चे को उसकी माँ का ही दूध पिलाना चाहिए। ब्याने के 48 घण्टे बाद तक जो दूध आता है उसे कोलेस्ट्रम कहते हैं। कोलेस्ट्रम में रोग प्रतिरोधक शक्ति होती है। इसके पीने से नवजात बच्चे में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यदि मादा ऊँट बच्चे को दूध न पिलाये तो बोतल में निपल लगाकर स्वयं दूध पिलाने का प्रयास करना चाहिए।

11. बच्चे के जन्म के तीन दिन पश्चात् लगातार तीन दिन तक विटामिन-ए छः लाख यूनिट एवं क्लोरम फेनिकॉल एक ग्राम लगवाना चाहिए। इनके लगाने से ऊँट के बच्चों में रतौंधी होने की सम्भावना नहीं रहती और दस्त नहीं लगते हैं तथा मृत्यु दर भी काफी कम हो जाती है।

12. बच्चे के जन्म के साथ माँ (साँड) के आहार का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

13. ब्याने के बाद साँड के थनों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अगर दूध बच्चा पूरी तरह न पी सके तो दूध निकाल लेना चाहिए अन्यथा थन खराब हो सकते हैं।

14. अधिकतर मादा ऊँट बच्चे को जन्म शीतकाल में ही देती है अतः ठण्ड से बचाव के लिए रात्रि में नवजात बच्चे को किसी परकोटे में रखना चाहिए अथवा किसी ऐसे स्थान पर जहाँ सीधी ठण्डी हवाएँ न लगे।

15. यदि बच्चे का जन्म मार्च, अप्रैल अथवा मई माह में हो तो गर्मी से बचाव करना चाहिए। दोपहर के समय छायादार स्थान पर रखना चाहिए। इससे लू लगने की सम्भावना कम होगी।

16. 6 मास की उम्र तक डीवर्मिंग कर देनी चाहिए। इस हेतु फेनबेडाजाल, मेबेन्डाजाल, लीवेमिसाल अथवा कोई सुरक्षित पेट के कीड़े मारने की दवा (एन्थलमेंटिक) उपयुक्त मात्रा में बच्चे को देना चाहिए।

17. एक माह तक बच्चे को केवल माँ का ही दूध पीने देना चाहिए। उसके पश्चात् माँ के दूध के साथ-साथ हरा सूखा चारा भी थोड़ी मात्रा में देना चाहिए।

18, तीन माह के पश्चात् तिब्रसा या सरा से बचाव हेतु टीका लगवाना चाहिए। ताकि इस भयंकर बीमारी से ऊँट के बच्चों को बचाया जा सके।

आलेख
एस. एन. टण्डन एवं नरेन्द्र शर्मा

प्रकाशक

परियोजना निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़ शिवबाड़ी

बीकानेर

आलेख

एस. एन. टण्डन एवं नरेन्द्र शर्मा